परिशिष्ट-४ प्रकृति (part 2)

११. वर्षा नक्षत्र योग

वर्षा का नक्षत्र	प्रभाव	लोकोक्ति
अश्विनी भरणी कृतिका रोहिणी मृगशिरा आर्द्रा पुनर्वसु		पुक्रव पुनर्वसु भरे न ताल फेर भरेंगे अगली साल।
पुष्य आश्लेषा मघा पूर्वा फाल्गुनी उत्तरा फाल्गुनी हस्त चित्रा स्वाति	सभी नाज अच्छी उपज धान, गन्ना, उड़द में वृद्धि तिल कोदों कपास में हानि उड़द में हानि जौ-चना-गेहूँ की फसल अच्छी कपास में हानि	बरसै मघा, भूमि अघा। हत्ता बरसै तीन की आसा साली शक्कर और है मासा। जो बरसेगी स्वाँत चरखा चलै न ताँत।
विशाखा अनुराधा ज्येष्ठा मूल पूर्वाषाढ़ा उत्तराषाढ़ा श्रवण धनिष्ठा शतभिषा पूर्वा भाद्रपद उत्तरा भाद्रपद रेवती		

१२. ऋतु चक्र : मास और वनस्पति : वसंत : चैत वैशाख

© इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र पहला संस्करणः १९९७

All rights reserved. No part of this book may be reproduced or transmitted in any form or by any means, electronic or mechanical, including photocopy, recording or by any information storage and retrieval system, without prior permission in writing.

(बोना/पौध लगाना)	फूलना	फलना	हवा	ऋतु चक्र	विशेष
फरफेंदुआ की बेल उग आती है।	-	-	फाल्गुन चैत में अहर (ओले कंकड़) चलती है आँधी से आम झड़ते हैं।	चमकी भली न चैत री	- चैत में फुलवारी फूली कोयल का स्वर
अरबी	-	-	-	वर्षा से बढ़वार, धूप से वृद्धि कम।	-
खीरा	-	-	-	-	-
	कचनार	-	-	-	-
	पियाबाँस	-	-	-	-
	कनेर	-	-	-	कुरबक-स्त्रियों के अलिंगन से पुष्पित होता है। (विश्वास)
-	गुलाब(चैती)	-	-	-	-
-	दोंनामरुआ	-	-	-	-
-	करील	-	-	-	-
ग्वार (खुत्ती)	-	-	-	-	-
-	अमलतास	-	-	-	-
-	-	गूलर	-	-	विश्वास-आधी रात को फूलता है। एक फूल लगता है, सूरज जैसी रोशनी वाला भाग्यवान ही देख सकता है।
-	ढाक	-	-	-	-
-	खजूर	-	-	-	-
-	सिरस के फूल गुल फन्नूस	-	-	-	-
-	-	बढ़ैर	-	-	-
-	अशोक	-	-	-	-
-	-	कीकर	-	-	फलै झूठी साख बबूल भरै।
-	नीम	-	-	-	-
-	-	पीपल/बरगद	-	-	-
-	बकाइन	-	-	-	यदि चैत में भूमि

© इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र पहला संस्करणः १९९७

All rights reserved. No part of this book may be reproduced or transmitted in any form or by any means, electronic or mechanical, including photocopy, recording or by any information storage and retrieval system, without prior permission in writing.

					पर लोटती हवा चले तो आम लसिया जाता है।
-	-	महुआ	-	-	(आम झूरनी हवा) चैत की पुरवा महुए को वरदान है।
-	सीसम	सीसम	-	-	-
-	सहजना	सहजना	-	-	-
-	सेंमल	डोडी लगती है	-	-	-
-	पाकर	-	-	-	-
-	केवड़ा	-	-	-	-
-	अनार	अनार	-	-	-
-	आँवला	आँवला (कार्तिक अगहन तक रहता है।)	-	-	-
-	करोंदा	-	-	-	-
-	गुलफन्नूस	-	-	-	-
-	चम्पा	-	-	-	-
-	(वैशाखी फसल) गेहूँ, जौ, चना, मटर, सरसों मसूर	-	-	-	-
-	सत्यानासी	-	१. तेज झोंकदार हवा झाँक चलती है। २. हड़होड़ा हवा चलती है ३. तपा तपते हैं	बूठौ भलौ न जेठ	वैशाख ज्येष्ठ की काली पीली तेज आँधी अंधड़ा कहलाती है। धूल चक्कर काटने लगे- भभूरा।
खुत्ती	-	-	पुरवा से हानि	-	-
मूँग	-	-	-	-	-
कपास	-	-	-	सूखा पड़ने पर कपास में चटका रोग लग जाता है। वन की पुरी (फूल) झड़ जाती है।	-
अरहर (वैरायटी)	-	-	पुरवा से पत्ते/फूल में हानि/पछवा से	सूरज से पैदावार में वृद्धि	-

© इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र पहला संस्करणः १९९७

All rights reserved. No part of this book may be reproduced or transmitted in any form or by any means, electronic or mechanical, including photocopy, recording or by any information storage and retrieval system, without prior permission in writing.

			लाभ		
लौका	-	अरबी	-	-	-
-	-	उड़द	-	-	-
-	-	ककड़ी	तेज हवा से बेल पलट जाती है। फल कम लगते हैं	तेज धूप से फल अधिक वर्षा से फल सड़ जाते हैं।	-
-	-	काशीफल	-	-	खरबूजा चाहे धूप आम चाहें मेह
-	-	खरबूजा	-	तेज धूप तथा लू से मिठास	
-	-	खीरूँ	-	-	-
-	-	अकौआ	-	-	जाके एकाएक इ जग व्यौसाय न कोय।
-	-	अशोक	-	-	सो निदाघ फूलौ फलै आक डहडहौ होय।
-	-	कटहल	-	-	-
-	-	खजूर	-	-	-
-	-	आम	-	-	आषाढ़ में वीर वहूटी
मक्का				आधे असाढ़ तो बैरी की ऊ बरसै	
अलसी	-	-	-	-	खुर्रट प्रारंभिक वर्षा हो जाने पर जुताई
बाजरा	-	-	-	-	-
गोभी (पौध)	-	-	-	-	असाढ़ न जोतौ एक बार अब जोतौ बार-बार।
चावल (पौध)	-	-	-	-	-
शकरकन्द	-	-	-	-	-
-	-	अरबी	-	-	-
-	-	खीरा	-	-	-
-	-	टिंडा	-	-	-
-	-	जंगल जलेबी	-	-	-
-	-	नीम	-	-	-
-	-	पीपल	-	-	-

© इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र पहला संस्करणः १९९७

All rights reserved. No part of this book may be reproduced or transmitted in any form or by any means, electronic or mechanical, including photocopy, recording or by any information storage and retrieval system, without prior permission in writing.

-	-	फालसा	लू चले तो फालसे में मिठास	-	-
-	-	खिरनी	-	-	-
-	-	जामुन	-	-	-
बाजरूँ	-	-	-	धूप से लाभ	बाजरे पर भुट्टा आया हो और मूसलाधार पानी पड़ जाये तो फूल मारा जाता है तथा फुल-धोबा रोग लग जाता है।
सरसों	-	-	-	-	-
टमाटर	-	-	पछवा से अधिक फल	बिजली की चमक से फूल नष्ट	
-	-	खीरा	पुरवा से फल कम	-	-
-	-	खुत्ती फली	-	-	-
-	-	टिंडा	-	-	सामन पुरबाई चलै। भादों में पछवाय। कंत उंगरन बेचि कें लरिका लेउ जिबाय।
-	कदम्ब	-	-	-	-
-	दुपहरिया	-	मक्का की गॉठ फूटती है तब पुरवाई चले तो जीमनी गिराड़ पड़ जाती है।	-	-
-	-	-	-	यदि वर्षा न हो तो ज्वार के भुट्टों को गभरा गिराड़ खा जाती है।	-
-	-	-	-	-	वर्षा के साथ ही जवासा मर जाता है।
ल्हैसुआ, सेंद (मक्का ज्वार के खेत में उपज	-	-	सावन-भादों में बड़े जो से चलनेवाली हवा-	-	-

© इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र पहला संस्करणः १९९७

All rights reserved. No part of this book may be reproduced or transmitted in any form or by any means, electronic or mechanical, including photocopy, recording or by any information storage and retrieval system, without prior permission in writing.

आते हैं।) निरगुंडी घास उग आती है			बैहरा-यदि इकलत्त आठ दिन चले तो ज्वार-बाजरा-मक्का और वन के पौधे का बिछौना-सा बिछ जाता है।		
-	गुड़हल (बंधूक)	-	-	-	माला नहीं बनाते, क्योंकि विश्वास है कि यह जिस घर में हो, वहाँ लड़ाई हो जाती है।
-	-	अमलतास	-	-	-
-	-	करोंदा	-	-	-
सुखदेई	सुखदेई घास (बैजनी फूल)	-	-	भादों में पुरवा न चले	सावन-भादों में आड़ी सीधी जोत-लपेटा व लगाई तो खेती व्यर्थ
लजमंती	लजमंती घास (पीला फूल)	-	-	मेघ न बरसे तो खेती हल्की।	-
समाई	समाई पौधा (सफेद)	-	-	-	-
रतुआ	रतुआ पौधा (पीला)	-	-	-	-
पतरचटा	पतरचटा पौधा (पीला)	-	-	-	-
मूली	-	-	-	-	-
-	मौलसिरी	-	-	-	-
-	धतूरा	धतूरा	-	-	१. सामन में कोयल चली जायेगी २. बर्र ततैया खत्म हो जायेंगे। ३. पपीहा-जलमुर्गा, बगुला, तितली, मजीरा, पटबीजना आवेंगे।

© इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र पहला संस्करणः १९९७

All rights reserved. No part of this book may be reproduced or transmitted in any form or by any means, electronic or mechanical, including photocopy, recording or by any information storage and retrieval system, without prior permission in writing.